विपश्यना पत्रिका संग्रह

वर्ष २२ से वर्ष २४ (जुलाई १९९२ से जून १९९५ तक)

भाग-८

विपश्यना विशोधन विन्यास

विपश्यना

पत्रिका संग्रह

भाग - ८

वर्ष २२ से वर्ष २४

(जुलाई १९९२ से जून १९९५ तक)

विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का तथा अन्य साधकों के विपश्यना पत्रिका में प्रकाशित लेखों का संग्रह

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

H94 - विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ८

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : सितंबर २०१७

मूल्यः रु. ११०.००

ISBN 978-81-7414-395-2

प्रकाशकः
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोनः ०२५५३-२४४९९८, २४४०७६,
२४४०८६, २४४१४४, २४४४४०
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रकः
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

विपश्यना पत्रिका संग्रह भाग - ८

विषयानुक्रमणिका

(जुलाई १९९२ से जून १९९३ तक)

महान परित्याग.....९

बर्मा का भिक्षु संघ (१).....१५

कैसे सज्जन लोग.....१५

महासी सयाडो.....१७

धन्य है मैत्री भावना.....१९

बर्मा का भिक्षु संघ (२).....२४

कैसे सज्जन लोग : साधक भिक्षु वैबू सयाडो.....२४

ऐसे थे भगवान बुद्ध (१).....३१

आंखों देखा विवरण.....३१

ऐसे थे भगवान बुद्ध (२).....३८

ब्रह्मायु धन्य हुआ.....३८

तीर्थ कुशीनगर और विपश्यना (– *कुमारी अंजली झा*).....४४

ऐसे थे भगवान बुद्ध (३).....४६

धर्म-समन्वित.....४६

मिटाओ मेरे भय आवागमन के (– *ले. डॉ. ओमप्रकाश*) ...५१

धन्य हैं धर्म सेवक!.....५५

आत्म कथन - १.....६२

धर्म ही महान है!.....६२

कारागार का उजला पक्ष.....६६

बुद्ध और बिम्बिसार (१) ६९

राजकुमारी चुन्दी ६९

आत्म कथन - २ .....७४

भावाभिभूत हो गया! ७४

बुद्ध और बिम्बिसार (२) ८०

कीचड़ में कमल खिला.....८०

मन और अंतर्मन (– *डॉ. ओम प्रकाश*).....८४

(जुलाई १९९३ से जून १९९४ तक)

बुद्ध और बिम्बिसार (३) ९१

नगरशोभिनी धर्मशोभिनी बनी ९१

आत्म-कथन - ३ .....९७

एक नया मोड़ ९७

बुद्ध और बिंबिसार (४) १०२

कौमारभृत्य.....१०२

बुद्ध और बिंबिसार (५) १०७

जीवक की प्रसिद्धि.....१०७

राजगृह का नगरश्रेष्ठि.....१०७

काशी का श्रेष्ठिपुत्र १०८

राजा प्रद्योत.....१०८

आत्म-कथन - ४ .....११३

मनों बोझ उतर गया! ११३

ऐसे थे भगवान - १ .....१२०

असीम करुणानिधान (१) १२०

रक्त-रंजित यज्ञ १२१

ऐसे थे भगवान - २ ..... १२६
असीम करुणानिधान (२) १२६
विपश्यना घर लौटी १३२
शाक्य राजवंश १३२
तपस्सु-भल्लिक १३३
अरहंत सीवली १३४
सोण और उत्तर १३४
स्थविर अरहं १३५
भिक्षु लेडी सयाडो १३७
सयातैजी १३८
सयाजी ऊ बा खिन १३८
आत्म-कथन - ५ ..... १४०
सत्तर वर्ष पूरे हुए १४०
७५वीं वर्षगांठ पर १४३
बुढ़ापा या जीर्णावस्था अनिवार्य है। (– *बालकृष्ण गोयन्का*) १४३
आओ धर्म को समझें! १४७
धर्म सनातन १५२
भगवान बुद्ध और उनकी शिक्षा १५७
उद्‌बोधन १६६
सभी कैदी हैं १६६
समता बनी रही (आप बीती) (– *डॉ. ओम प्रकाश*) १६७

(जुलाई १९९४ से जून १९९५ तक)

आत्म कथन - ६ ..... १७५
विपश्यना की रजत जयंती १७५

आत्मभाव छूटे.....१८२
महावीर महाराज.....१८५
मेत्ता-भावना.....१९१
ब्रह्म-विहार (– *डॉ. ओम प्रकाशजी, वरिष्ठ स. आ.*)....१९४
बुद्ध और बिम्बिसार (६) १९९
अभागा राजकुमार जयसेन.....१९९
बुद्ध और बिम्बिसार (७) २०५
भ्रमित जयसेन.....२०५
तथागत का पार्थिव शरीर.....२११
उस धरती पर हम स्वयं तपें! २१५
बढ़े पारमी क्षांति की २१७
पत्नी-वियोग २२०
बड़े भाई का वियोग २२१
पितामह का वियोग.....२२२
शील-कथा २२४
समाधि कथा.....२२९
आत्म कथन - ७ .....२३६
धन्य विमला.....२३६
धर्म का शुद्ध स्वरूप २४३